'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जावनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८१ } वाराणसी, गुरुवार, ९ जुलाई, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

ऊधमपुर (कश्मीर) १६-६-'५९

जमीन की मालकियत का दावा करना कुफ्र

गाँव-गाँव जाकर जानकारी दें

आप लोग चुनाव के सारे पचड़े छोड़कर लोगों के बीच जायँगे तो लोग प्रेम से खिलायेंगे। उनके पास रोटी कम है, फिर भी वे उसमें से एक टुकड़ा हमें भी देंगे। हमने आज सुबह इस गाँव में चक्कर लगाया। गाँव में कुल १६ घर हैं, परन्तु इतने दूर-दूर हैं कि सारा गाँव देखना हो तो तीन मील का चक्कर लगाना होगा। हमने पाँच घर देखे। बाबा का भाषण सुनने के लिए दूर-दूर से जो मेहमान आये हैं, उनके लिए हर घर की मालकिन रोटी बना रही थी। इस तरह देहातवालों में जितनी मुहब्बत और हमदर्दी होती है, उतनी शहरवालों में नहीं होती। शहरों में तंगदिल लोग नजर आते हैं। भगवान ने उन लोगों के दिल वैसे नहीं बनाये, फिर भी धीरे-धीरे उनके दिल सख्त बनते गये। गरीब लोग कितनी मुसीबत में जिंदगी बसर करते हैं, यह शहरवालों को मालूम ही नहीं है। अगर गाँव-गाँव जाकर प्रेम से विचार समझानेवाले कुछ लोग निकलेंगे तो वे गाँववालों से खूब प्यार पायेंगे।

अपना भाईचारा बनाओ

हम गाँव-गाँव जाकर यही समझाते हैं कि तुम अपना भाईचारा बनाओ। जमीन की मालकियत छोड़ो। भगवान ने इन्सान-इन्सान में कोई फर्क नहीं किया है। सबको भूख, प्यास लगती है, मेहनत के बिना रोटी पैदा नहीं होती, सबको मुहब्बत की, हमदर्दी की जरूरत होती है। हर कोई बीमार पड़ता है तो उसे खिदमत की जरूरत महसूस होती है। अल्ला ने ऊँच-नीच का भेद नहीं बनाया, हमने ही बनाया है। इसलिए हम भेद को मिटाकर प्रेम बढ़ायें। जमीन की सबको जरूरत होती है। इसलिए जमीन मुस्तरका साझी होनी चाहिए। जमीन का मालिक भगवान ही है। अगर इन्सान जमीन की मालकियत का दावा करेगा तो कुफ्र करेगा। गाँव में कोई भूखा और बेकार न रहे, इसकी जिम्मेवारी गाँववालों को उठानी चाहिए, गाँव में दस्तकारियाँ बढ़ानी चाहिए।

ग्रामोद्योग खड़ा करें

हम अपना खाना अपने हाथों से बनाते हैं तो वह एक रोजगार ही है। अगर हम होटल का खाना खाते तो पैसे देने पड़ते। हम अपना खाना मेहनत से हासिल करते हैं, अपने गाय-बैल चराते हैं, अपना आटा पीसते हैं। ये सब रोजगार ही हैं। ये रोजगार हमें किसने दिये? हमने ही दिये। तो क्या दूसरे रोजगार दुनिया देगी? हम्हें ही सोचना होगा कि क्या हम अपने गाँव में कपड़ा, तेल, गुड़ बनाने के उद्योग खड़े कर सकते हैं; जिससे गाँववालों को रोजगार मिले। रोजगार का मतलब पैसा नहीं। यह खयाल गलत है। हम अपने लिए जरूरत की चीजें पैदा कर लेते हैं तो वह रोजगार हो जाता है। लेकिन सबको रोजगार देने का जिम्मा ग्रामसभा तब उठा सकेगी, जब गाँववाले मिल-जुलकर काम करने की बात तय करेंगे। यह काम सरकार करेगी तो नहीं बनेगा, नहीं बनेगा, नहीं बनेगा। इसलिए आप लोग तय करें कि हम जमीन की मालकियत मिटायेंगे, अपने गाँव में स्वराज्य लायेंगे! तुम्हारा स्वराज्य तुम्हें ही हासिल करना होगा। यह सारा करने के लिए, गाँव की सेवा करने के लिए, गाँववालों को दुनिया भर की जानकारी देने के लिए गाँव-गाँव में खादिम, शान्ति-सैनिक चाहिए। दक्षिण में केरल में झगड़े चल रहे हैं। सारा मामला डाँवाडोल है। लेकिन उसकी कोई जानकारी आपके पास नहीं पहुँची है। अगर इन्सान के पास दुनियाभर की ठीक जानकारी पहुँचती रही तो उस पर अचानक कोई आफत आ नहीं गिरती। वह पहले से ही सावधान रहता है और बच जाता है। पाँच दिन बाद बारिश होगी, यह मालूम हो तो किसान उसका लाभ उठा सकता है। इसलिए गाँव-गाँव में ऐसे खिदमतगार होने चाहिए जो गैरजानिबदार हों और गाँववालों को ठीक नसीहत दे सकें। [गतांक से समाप्त]

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

नारियाँ (कश्मीर) २१-६-'५९

भगवान कब मदद देता है ?

पिछले महीने की २२ तारीख को हमने जम्मू-कश्मीर में कदम रखा था। आज उसे एक महीना पूरा हो रहा है। इस बीच हमें बहुत कुछ देखने, सुनने और सीखने को मिला। कुल मिलाकर बहुत खुशी हुई। यहाँके सब तबकों के लोगों के साथ हमारी मुलाकातें हुईं। सभी लोग बेरोक-टोक हमसे मिलते थे। मुख्तलिफ पार्टियों के लोग अपनी-अपनी बात हमारे सामने रखते थे। हमने देखा, अपनी बातें रखने में उन्हें किसी प्रकार की न कोई अंदरूनी और न बाहरी रुकावट महसूस हुई। सबका दिल हमारे सामने खुला। जमातों से भी हमारी बातें हुईं और अनफरदा हुईं। उन सबका और यहाँ जो देखा, उसका हम पर काफी असर रहा।

प्रेममय क्रान्ति के आसार

हम समझते हैं कि इस सूबे में अमन और प्यार के तरीके से एक इन्किलाब होने जा रहा है और अपने भाइयों को अपने साथ करने में लोगों के दिल खुल रहे हैं। हमारे देश के दिल में हमेशा के लिए यह बात रही है कि हम अपने पड़ोसी पर प्यार करें, मिल-जुलकर रहें, उसके साथ झगड़ा न करें। ये बातें पहले से ही हमारी तमद्दुन में हैं। बीच में १०-१२ साल पहले जरूर कुछ हैवानियत आयी थी। लेकिन वह थोड़े दिनों के लिए आयी और चली भी गयी। फिरसे इन्सानियत कायम हुई। बात ऐसी है कि इन्सान के दिल में बीच-बीच में बुराई आती है, लेकिन वह टिकती नहीं। इन्सान की फितरत में जो अच्छाई है, वही कायम रहती है। फिजा बिगड़ जाने की वजह से बीच-बीच में बुराई आती है।

आज की बहुत सारी कशमकश बनावटी

आज दुनिया भर में कशमकश चल रही है। उसमें से बहुत सारी बनावटी है। चंद लोगों ने अपने खयालों के लिए उन्हें खड़ा किया है। उनमें खुदगर्जी है, बहुत-सी गलतफहमी है और कुछ असलियत भी है। असलियत यह है कि अभी भी हमारे देश में गरीबी मिटी नहीं, बल्कि कायम है। हमने उसमें कुछ फर्क तो जरूर किया है, लेकिन बहुत ज्यादा फर्क नहीं किया है। हमें बहुत-सी मुश्किलातों का सामना करना पड़ा था। इस पर सोचते हुए हमने कुछ तरक्की तो की है, लेकिन जितनी करनी चाहिए, उतनी नहीं की। देश में जो गरीबी है, उसका फायदा उठानेवाले पड़े हैं। यूरोप, अमेरिका में हमारे जैसी गरीबी नहीं है, फिर भी वहाँ झगड़े कम नहीं हैं। वहाँ गरीबी के नहीं, अमीरी और खुशहाली के मसले हैं। जैसे गरीबी के मसले होते हैं, वैसे ही खुशहाली भी इन्सान के लिए मसला बन जाती है। अमीरी हो तो इन्सान का दिल, जिसे कुरानशरीफ में 'हयातुद दुनिया' कहा है, उसमें याने इस चंद रोज की दुनिया में फँस जाता है। फिर दिमागी बुराइयाँ और बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। यूरोप, अमेरिका में बाहरी तरक्की खूब हुई है। वहाँ खाना, पीना, कपड़ा खूब है। ऐशोआराम के तरह-तरह के साधन मौजूद हैं; फिर भी एक चीज की कमी है। वहाँ दिल में सुकून, शान्ति, तसल्ली नहीं है। वहाँ के डाक्टरों के सामने दिमागी बीमारियों का मसला पेश है। वहाँ तरह-तरह के पागलपन हैं। इन्सान के दिमाग पर एक जज्बा हावी हो जाता है। कभी गुस्सा हावी हो जाता है और वह अपने दिमाग पर काबू नहीं कर पाता।

अमीरी में भी खतरा

इसलिए समझना चाहिए कि सिर्फ गरीबी मिटने से मसले हल नहीं होंगे। वह तो जरूर मिटनी ही चाहिए। लेकिन इन्सान पर अमीरी का हमला होता है तो वह गलत रास्ते पर जाता है। इसलिए बीच की राह लेनी चाहिए। न गरीबी हो, न अमीरी, बल्कि मसावात हो। आखिर हमारी जिंदगी का मकसद खाना, पीना और बाल-बच्चे पैदा करना ही नहीं है, बल्कि परमात्मा के पास पहुँचकर उनका दीदार हासिल करना है। हमें इस दुनिया में ऐसा काम करना चाहिए, जिससे हम परमात्मा की आजमाइश में फेल न हों और उनके पास इज्जत के साथ पहुँचें। जहाँ गरीबी होती है, वहाँ इन्सान अपना दिमाग खो बैठता है। उसमें सोचने की ताकत नहीं रहती। जिससे तरह-तरह की उलझनें पैदा होती हैं। अमीरी हो तो भी तरह-तरह के मसले पैदा होते हैं। इस तरह गरीबी में भी खतरा है और अमीरी में भी। इन्सान को परमेश्वर ने ऐसा पैदा किया है कि उसे न तो इधर झुकना चाहिए और न उधर ही। बल्कि सीधी राह लेनी चाहिए, जिसे कुरानशरीफ में 'सिरातुल मुस्तकीम' कहा है। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि हमें अपने मुल्क में क्या करना है।

टीले की मिट्टी खोद गड्ढे में भरो

बड़ी खुशी की बात है कि यहाँके लोगों के दिल इस बात के लिए तैयार हैं कि हम अपने गाँव का एक कुनबा बनायें, गाँव के लिए योजना बनायें। यहाँ के, आपके नुमाइन्दा कह रहे थे कि हम ईमान की बात को मानते हैं। इन्सान का एक ईमान होता है और वह चाहता है कि हम ईमान पर कायम रहें, हमारा ईमान न टूटे। लेकिन अगर इन्सान अपना दिमाग खो बैठता है तो उसका ईमान टूट जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि न तो ज्यादा गरीबी हो और न ज्यादा अमीरी ही। मैं किसीको ज्यादा अमीर देखता हूँ तो मुझे दुःख होता है। मैं अपने अमीर मित्रों से कहता रहता हूँ कि खबरदार रहो, जैसे दुःख में खतरा है, वैसे ही सुख में भी। चढ़ाई में खतरा है, तो उतराई में भी है। उतराई हो तो बैल जोर से दौड़ना चाहते हैं। उस समय उन्हें काबू में न रखा जाय तो गाड़ी गड्ढे में गिरने का खतरा रहता है। जैसे उतराई पर बैल बेकाबू होते हैं, वैसे ही सुख में, ऐशो-आराम में इन्सान दौड़े जाता है और पता नहीं चलता कि वह किस गड्ढे में गिरेगा। जैसे चढ़ाई पर बैल आगे बढ़ना ही नहीं चाहते, उन्हें पीछे से ढकेलना पड़ता है, वैसे ही दुःख में हमारी इन्द्रियाँ, आगे बढ़ने से इन्कार करती हैं। चढ़ाई और उतराई दोनों हालत में इन्सान को सावधान रहना ही पड़ता है। हाँ, लेकिन जहाँ ऊँचा-नीचा न हो, बिलकुल समान, सीधा रास्ता हो, वहाँ सावधान रहने की जरूरत नहीं पड़ती। ऐसे रास्ते पर बैल आगे बढ़ते रहते हैं और गाड़ीवाला सो भी जाता है। इस तरह यूरोप-अमेरिका का अनुभव दिखा रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा सुख होता है, वहाँ भी खतरा है। अपने

देश का अनुभव बता रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा दुःख—गरीबी होती है, वहाँ भी खतरा है। टीले और गड्ढे हों तो वहाँ खेती नहीं हो सकती। इसलिए करना यह चाहिए कि टीले की मिट्टी खोदकर गड्ढे में भरनी चाहिए। तभी खेती होगी।

हमें ग्रामदान करना है

हमें अपने देश में यही करना होगा और समझ-बूझकर करना होगा। हमारे पास ज्यादा सुख है तो अपने दुःखी पड़ोसी के लिए उसका हिस्सा देना चाहिए। इसीको ग्रामदान कहते हैं। हम अपने गाँव की जमीन की मालकियत मिटाकर जमीन सबकी बना दें और यह तय करें कि हम अपनी जरूरीयात की चीजें गाँव में ही पैदा करेंगे। आज गाँव के लोग सारा कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। लेकिन अगर वे तय करें कि हम गाँव में चर्खा चलायेंगे तो घर-घर में थोड़ी-थोड़ी दौलत आयेगी। जैसे बारिश बूँद बूँद गिरती है, लेकिन सब दूर गिरती है, इसीलिए थोड़े समय में ही कुल जमीन तर हो जाती है, वैसे ही चर्खा हर घर में बूँद-बूँद दौलत पैदा करता है। लेकिन मिलों से वैसी ही हालत होती है, जैसे बड़ा नल होने पर एक ही जगह खूब पानी मिलता है, लेकिन बाकी सारा सूखा ही रह जाता है। हमें अपने गाँव में यही सब करना है।

ये सर्वोदय-सन्देश के प्यासे

पहले हमें यहाँ ग्रामदान की बात कहने में डर मालूम पड़ता था। हमें लगता था कि हम जम्मू-कश्मीर के लोगों की हालत नहीं जानते। १० साल पहले यहाँ काफी आफतें आयी थीं। उससे एक जज्बा था। इसलिए न मालूम यहाँके लोग हमारी बात कबूल करेंगे या नहीं। लेकिन हमने यहाँ एक अजीब बात देखी। हमने देखा कि यहाँके लोग हमारी बातें सुनने के लिए बिलकुल प्यासे हैं। जैसे धूप से तपी हुई जमीन हो तो वह पहली बारिश का पानी चूस लेती है, वैसे ही यहाँके लोग बिलकुल तपे हुए थे और अब उन्हें लग रहा है कि बारिश बरस रही है। वे चाहते ही थे कि सर्वोदय-विचार यहाँ आये। मजहब, पार्टी, जबानें ये सब चीजें दिल के टुकड़े करती हैं। लेकिन सर्वोदय-विचार सबको जोड़नेवाला है। इससे सबके दिल को तसल्ली हो रही है। इसलिए अब मैं यहाँ बिलकुल बेखटके घूम रहा हूँ। पहले मुझे लगता था कि यहाँ सम्हल-सम्हलकर चलना होगा। लेकिन अब लगता है कि उसकी कोई जरूरत नहीं, यह अपना ही मुल्क है। यहाँके लोग सर्वोदय का संदेश सुनने के लिए इन्तजार में ही हैं।

अच्छा बोलो तो खुदा इमदाद देगा

यहाँ भाइयों ने मुझसे कहा कि यहाँ ग्रामदान हो सकता है। जहाँ उन्होंने कहा कि बनेगा, वहाँ वह भगवान का कौल हो गया। अपनी जबान से अच्छा शब्द निकला तो भगवान मदद करता है। वह तो मदद देने के लिए तैयार बैठा ही है और देख रहा है कि कौन मदद माँगता है। लेकिन तुम कहोगे कि मुझे बुराई में दिलचस्पी है और हे खुदा! मुझे तेरी मदद की दरकार है, मैं पड़ोसी का खेत लूटना चाहता हूँ, मुझे इमदाद दो तो वह इमदाद नहीं देगा। अच्छा कौल बोलोगे, तभी वह इमदाद देगा।

ताकत से बाहर की भी बोलो

दूसरी बात यह है कि जब तुम अपनी ताकत के बाहर का काम उठाओगे, तभी वह इमदाद देगा। अगर तुम अपनी ताकत के अन्दर की बात कहोगे तो वह इमदाद नहीं देगा। वह कहेगा कि 'तुम अपनी ताकत से काम करो।' कोई लड़का भगवान से माँगे कि 'हे खुदा! मुझे परीक्षा में पास करो' तो भगवान कहेगा कि 'इसमें मेरी मदद की जरूरत नहीं, तुम पढ़ाई करो।' इस तरह अच्छा काम हो और वह इतना ऊँचा हो कि अपनी ताकत के बाहर का हो, तभी भगवान मदद देता है। ग्रामदान करना है, भलाई से बदलना है, शांति-सैनिक बनना है, ऐसी बात कहोगे तो भगवान कहेगा कि मैं मदद दूँगा।

निजी अनुभव

वैसे किताबों ने, शास्त्रों ने यही कहा है, लेकिन मैं अपने अनुभव की बात कह रहा हूँ कि वह मदद देने के लिए तैयार बैठा है। भूदान-यज्ञ इसी तरह शुरू हुआ। एक गाँव के हरिजनों ने मुझसे ८० एकड़ जमीन माँगी और जब मैंने गाँववालों के सामने यह बात रखी तो एक भाई ने १०० एकड़ जमीन दी। मैं सोचने लगा कि यह क्या चीज बनी? तब मुझे लगा कि यह परमेश्वर का इशारा है, अब मुझे इस काम को उठा लेना चाहिए। फिर मैंने तय किया कि हिंदुस्तान के कुल बेजमीनों को जमीन मिलनी चाहिए। मैं तो फकीर हूँ। मेरे न कोई साथी थे, न कोई इदारा था, न कोई कारकून। मैं अकेला शख्स था। लेकिन परमेश्वर पर भरोसा रखकर मैंने हिसाब लगाया कि देश का छठा हिस्सा जमीन चाहिए। तब से आजतक ८ साल हुए—मैं घूम रहा हूँ और मैंने अपनी ताकत से बाहर का काम उठाया है। परमेश्वर मदद दे रहा है, क्योंकि मैंने अच्छा काम उठाया है। सारे हिन्दुस्तान की छठा हिस्सा जमीन हासिल कर बेजमीनों को देना मेरी ताकत के बाहर की बात थी। लेकिन मैंने ठान लिया कि जमीन माँगेंगे और देखेंगे कि अल्ला मियाँ क्या करता है। आजतक काम चल ही रहा है। यहाँ सीलिंग हुआ तो भी लोग दान दे रहे हैं याने अपना पेट काटकर दे रहे हैं। परमात्मा सबसे दिला रहा है। यह मेरे अनुभव की बात है कि परमात्मा पर भरोसा रखकर अपनी ताकत के बाहर की बात उठाने पर वह जरूर पूरी होती है। अंपनी ताकत से नहीं, उसकी ताकत से होती है।

आप ग्रामदान करेंगे तो जम्मू-कश्मीर में एक बुनियादी इन्किलाब होगा और ऐसे तरीके से होगा कि सबको सब किस्म का फायदा होगा। किसीको कोई नुकसान नहीं होगा। यहाँके लोगों ने हमें यकीन दिलाया है कि यहाँ ग्रामदान होगा और हम करके ही रहेंगे। तब हमें एहसास हुआ कि हम यहाँ आये हैं, तो यहाँके लोगों की खिदमत में हम कुछ कर सकते हैं और भगवान के भरोसे वह होकर रहेगा। ◆◆◆

ग्रामदान का स्वरूप

ग्रामदान हो जाने पर उस गाँव में कोई सामूहिक फार्म न होगा, किन्तु हर परिवार को खेती के लिए जमीन का एक टुकड़ा दिया जायगा। वे अपनी रोटी कमायेंगे और उनकी कमी को ग्राम-समाज पूरा करेगा। अतः व्यक्तिगत प्रेरणा तो रहेगी ही, साथ ही सामाजीकरण के लाभ भी उपलब्ध होंगे। हम व्यक्तिगत प्रेरणा खतम नहीं कर रहे हैं। अगर आप अपनी मदद खुद करेंगे तो समाज की सहायता का लाभ भी आपको मिलेगा। आजकल अगर कोई कठिन मेहनत करता भी है तो उसे समाज की ओर से कोई मदद नहीं मिलती; किन्तु गांधीवादी समाज में उसे इस तरह की मदद अवश्य मिलेगी। ग्रामदान के बाद जमीन की मालकियत मिट जायगी। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन कल्लार (कश्मीर) २२-६-'५९

ग्रामदान को टालने से मसले और पेचीदे होंगे

आज बहुत से भाई हमसे मिलने आये थे, जिनके साथ काफी चर्चा हुई। वे अपने दुःख हमारे सामने रखते गये। हमने उनसे कहा कि जितनी ही दुःख की कहानियाँ आप मुझे सुनाते हैं, उन सबका हल तभी निकल सकता है, जब जमीन की मालकियत मिटे, गाँव का एक कुनबा बने और सब मिलकर गाँव के बारे में सोचें। जब तक जमीन की अलग-अलग मालकियत है, तब तक हम कितनी भी कोशिश करें तो भी गाँव के मसले हल न कर सकेंगे। बल्कि वे बढ़ते ही जायँगे और दिन-ब-दिन पेचीदे ही होते जायँगे। फिर सरकार की मदद गाँवों को नहीं पहुँचेगी। अगर पहुँची तो भी जिन्हें वह मिलनी चाहिए, उन्हें नहीं मिलेगी।

एकके ही हाथ में अपना भला-बुरा क्यों सौंपें ?

आज हमारे पास एक शिकायत आयी है कि किसी गाँव के लोगों ने पानी के लिए सरकार के पास अर्जी पेश की। पैसा मंजूर भी हुआ, लेकिन बीच में ही गायब हो गया, क्योंकि एक आध गलत इन्सान बीच में आ गया। इस तरह दुनिया में गलत इन्सान तो होते ही हैं। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि किसी एक के हाथ में अपना भला-बुरा सौंपें ही क्यों ?

जम्हूरियत का पूरा फायदा उठायें

यहाँ बख्शीजी हैं, जिनसे आप खुश हैं। उन्होंने कुछ काम किये हैं और कुछ करने के लिए बाकी हैं। जो काम किये हैं, उनका नाम लेकर कुछ लोग कहते हैं कि इतना हुआ। जो काम नहीं हुए, उनका नाम लेकर कुछ लोग कहते हैं कि अभी तक इतना नहीं हुआ। इसी तरह पार्टियाँ बनतीं हैं। जो हुआ है, उस पर एक पार्टी जोर देती है और जो नहीं हुआ, उस पर दूसरी पार्टी जोर देती है। एक पार्टी तारीफ करती है तो दूसरी पार्टी निन्दा। लेकिन क्या किसीकी तारीफ या निंदा करना, यही हमारा धंधा है ? हमें तो अपनी ताकत बनानी चाहिए। अच्छे शख्स के हाथ में सत्ता आने पर हमारा अच्छा चलता है और बुरे शख्स के हाथ में आने पर खराब चलता है। पुराने राजाओं के जमाने में भी यही चलता था। हमने उसे खूब देखा और चखा। आखिर इसीलिए ज़म्हूरियत की पनाह ली कि हम किसी एक शख्स के हाथ में अपना नसीब सौंपने से बचें। लेकिन आज भी सरकार पर सारा दारोमदार रहा तो जम्हूरियत में भी हमारे दुःख वैसे ही कायम रहेंगे। अगर हम जम्हूरियत का पूरा फायदा उठाना चाहते हैं तो हमें गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य बनाना होगा।

सर्व-दुःख-विमोचक ग्रामदान

मैंने उन भाइयों से कहा कि तुम्हारे सब दुःख मिटाने का इलाज है—ग्रामदान। ग्रामदान होगा तो फिर जो लोग गाँव छोड़कर इधर-उधर चले गये हैं, वापस आने पर उनको भी गाँव में जगह मिलेगी। नहीं तो कानून के मुताबिक आज उनके आने पर उन्हें उनकी जमीन दी जायगी। फलतः आज उनकी जमीन जिन शरणार्थियों को दी गयी है, उन्हें बेदखल करना पड़ेगा तो और एक मसला खड़ा हो जायगा। इसलिए आज जिन शरणार्थियों को जमीन मिली है, वे ग्रामदान करते हैं तो उसमें उनका भी फायदा है। ग्रामदान होने पर भूतपूर्व सैनिकों के बारे में भी सोचा जायगा, उन्हें भी गाँव में जगह दी जायगी। अगर गाँव की आबादी बढ़ जाय तो उसपर सब मिलकर सोचेंगे। फिर कुछ-न-कुछ हल निकलेगा ही।

इसलिए मैं इस नतीजे पर आया हूँ कि जमीन की मालकियत मिटाये बिना हिन्दुस्तान के मसले हल नहीं होंगे और कश्मीर के तो कतई हल नहीं होंगे। यहाँ कई मसले पेश हैं, मालिकों के, मुजारों के, बेजमीनों के, शरणार्थियों के, पाकिस्तान से वापस आनेवालों के, भूतपूर्व सैनिकों के मसले पेश हैं। ग्रामदान से ये सब मसले हल हो सकते हैं। उसे टालने की हम जितनी कोशिश करेंगे, उतने ही वे पेचीदे बनते जायँगे। ◆◆◆

अनुक्रम

१. जमीन की मालकियत का दावा करना कुफ्र
ऊधमपुर १६ जून '५९ पृष्ठ ५४५
२. भगवान कब मदद देता है ?
नारियाँ २१ जून '५९ " ५४६
३. ग्रामदान को टालने से मसले....
कल्लार २२ जून '५९ " ५४८

◆◆◆

ग्रामराज्य की बुनियाद

एक था गांव। वहां कसाई लोग रहते थे। वे वहांके बकरे को शेफील्ड की छुरी से काटते थे। फिर आ गया स्वराज्य। तो तय हो गया कि अब शेफील्ड की छुरी से बकरे नहीं काटे जायँगे, अलीगढ़ की छुरी से काटे जायँगे। परन्तु बकरे तो चिल्लाते ही रहे। कसाई कहने लगा : 'अरे मूर्ख, अब तू क्यों चिल्लाता है ? अब तू शेफील्ड की छुरी से नहीं काटा जा रहा है, अब तो तू अलीगढ़ की छुरी से काटा जा रहा है।' क्या यह सुनकर बकरा खुश होगा ? इसलिए स्वराज्य दिल्ली में आया, इतने से कुछ नहीं बनता। मैं धूप में घूम रहा हूँ। मुझे बहुत प्यास लगी है, बहुत दुःखी हो रहा हूँ। एक पेड़ के नीचे प्यास के मारे बैठ जाता हूँ। मित्र कहता है : 'अरे, पांच मील की दूरी पर ही नदी है।' थोड़ा चल लेता हूँ। मित्र फिर से कहता है कि 'अरे, अब तो नदी दो मील की दूरी पर ही है। क्यों रोता है ? पहले पांच मील पर थी, तब रोते थे। तब तो ठीक था, लेकिन अब तो दो मील पर ही है।' नदी पांच मील की दूरी पर से दो मील दूर है तो क्या प्यास बुझ जायगी ? प्यासे को तो तब समाधान होगा, जब पानी अन्दर जायगा। दस हाथ दूर पर हो तो भी समाधान नहीं होगा। इस तरह जब सब लोगों के अनुभव में स्वराज्य आयेगा, तब गांव-गांव में स्वराज आयेगा। ग्रामदान ग्रामराज्य की बुनियाद है।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी